Teacher's Name - C. Patel
Class - 9th
Section - Rose
Subject - Hindi

S. N.	Date	Lesson No. & Name	Classwork	Homework
1	2.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	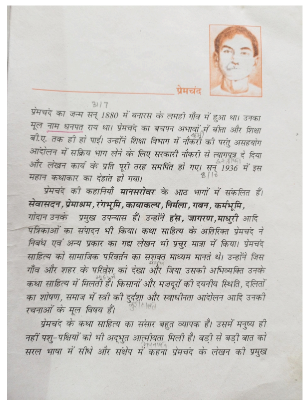 प्रेमचंद प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 में बनारस के लमही गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम धनपत राय था। प्रेमचंद का बचपन अभावों में बीता और शिक्षा बी.ए. तक ही हो पाई। उन्होंने शिक्षा विभाग में नौकरी की परंतु असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और लेखन कार्य के प्रति पूरी तरह समर्पित हो गए। सन् 1936 में इस महान कथाकार का देहांत हो गया। प्रेमचंद की कहानियाँ **मानसरोवर** के आठ भागों में संकलित हैं। **सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि,** गोदान उनके प्रमुख उपन्यास हैं। उन्होंने **हंस, जागरण, माधुरी** आदि पत्रिकाओं का संपादन भी किया। कथा साहित्य के अतिरिक्त प्रेमचंद ने निबंध एवं अन्य प्रकार का गद्य लेखन भी प्रचुर मात्रा में किया। प्रेमचंद साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम मानते थे। उन्होंने जिस गाँव और शहर के परिवेश को देखा और जिया उसकी अभिव्यक्ति उनके कथा साहित्य में मिलती है। किसानों और मज़दूरों की दयनीय स्थिति, दलितों का शोषण, समाज में स्त्री की दुर्दशा और स्वाधीनता आंदोलन आदि उनकी रचनाओं के मूल विषय हैं। प्रेमचंद के कथा साहित्य का संसार बहुत व्यापक है। उसमें मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षियों को भी अद्भुत आत्मीयता मिली है। बड़ी से बड़ी बात को सरल भाषा में सीधे और संक्षेप में कहना प्रेमचंद के लेखन की प्रमुख 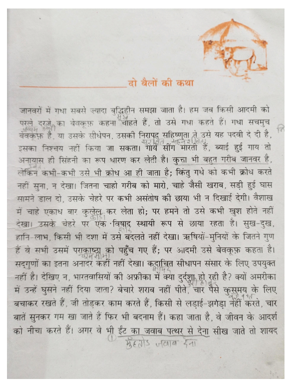 दो बैलों की कथा जानवरों में गधा सबसे ज़्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को परले दरजे का बेवकूफ़ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ़ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याई हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है; किंतु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहो गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी। वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो; पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा। उसके चेहरे पर एक विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-दुख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। ऋषियों-मुनियों के जितने गुण हैं वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं; पर आदमी उसे बेवकूफ़ कहता है। सद्गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा। कदाचित सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है। देखिए न, भारतवासियों की अफ्रीका में क्या दुर्दशा हो रही है? क्यों अमरीका में उन्हें घुसने नहीं दिया जाता? बेचारे शराब नहीं पीते, चार पैसे कुसमय के लिए बचाकर रखते हैं, जी तोड़कर काम करते हैं, किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं फिर भी बदनाम हैं। कहा जाता है, वे जीवन के आदर्श को नीचा करते हैं। अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते तो शायद	1. प्रेमचंद का जीवन परिचय याद करें। 2. जानवरों में सबसे बुद्धिहीन किसे समझा जाता है?
2	3.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	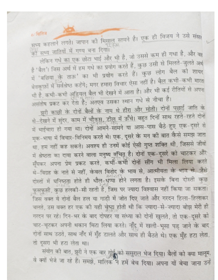	1.गधे को बुद्धि हैं क्यों माना जाता है? 2. गधे तथा ऋषि मुनियों में क्या समानता देखी गई है?

3	4.3.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	प्रेमचंद/7 अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने, पर झूरी के साले गया को घर तक गोईं ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाएँ-बाएँ भागते, पगहिया पकड़कर आगे से खींचता, तो दोनों पीछे को ज़ोर लगाते। मारता तो दोनों सींग नीचे करके हुँकारते। अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती, तो झूरी से पूछते–तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था तो और काम ले लेते। हमें तो तुम्हारी चाकरी में मर जाना कबूल था। हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की। तुमने जो कुछ खिलाया, वह सिर झुकाकर खा लिया, फिर तुमने हमें इस ज़ालिम के हाथ क्यों बेच दिया? संध्या समय दोनों बैल अपने नए स्थान पर पहुँचे। दिन-भर के भूखे थे, लेकिन जब नाँद में लगाए गए, तो एक ने भी उसमें मुँह न डाला। दिल भारी हो रहा था। जिसे उन्होंने अपना घर समझ रखा था, वह आज उनसे छूट गया था। यह नया घर, नया गाँव, नए आदमी, उन्हें बेगानों-से लगते थे। दोनों ने अपनी मूक-भाषा में सलाह की, एक-दूसरे को कनखियों से देखा और लेट गए। जब गाँव में सोता पड़ गया, तो दोनों ने ज़ोर मारकर पगहे तुड़ा डाले और घर की तरफ़ चले। पगहे बहुत मज़बूत थे। अनुमान न हो सकता था कि कोई बैल उन्हें तोड़ सकेगा; पर इन दोनों में इस समय दूनी शक्ति आ गई थी। एक-एक झटके में रस्सियाँ टूट गईं। झूरी प्रातःकाल सोकर उठा, तो देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं। दोनों की गरदनों में आधा-आधा गराँव लटक रहा है। घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं और दोनों की आँखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है। झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्गद हो गया। दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। प्रेमालिंगन और चुंबन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था। घर और गाँव के लड़के जमा हो गए और तालियाँ बजा-बजाकर उनका स्वागत करने लगे। गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी। बाल-सभा ने निश्चय किया, दोनों पशु-वीरों को अभिनंदन-पत्र देना चाहिए। कोई अपने घर से रोटियाँ लाया, कोई गुड़, कोई चोकर, कोई भूसी। 8/क्षितिज एक बालक ने कहा–ऐसे बैल किसी के पास न होंगे। दूसरे ने समर्थन किया–इतनी दूर से दोनों अकेले चले आए। तीसरा बोला–बैल नहीं हैं वे, उस जनम के आदमी हैं। इसका प्रतिवाद करने का किसी को साहस न हुआ। झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी। बोली–कैसे नमकहराम बैल हैं कि एक दिन वहाँ काम न किया; भाग खड़े हुए। झूरी अपने बैलों पर यह आक्षेप न सुन सका–नमकहराम क्यों हैं? चारा-दाना न दिया होगा, तो क्या करते? स्त्री ने रोब के साथ कहा–बस, तुम्हीं तो बैलों को खिलाना जानते हो, और तो सभी पानी पिला-पिलाकर रखते हैं। झूरी ने चिढ़ाया–चारा मिलता तो क्यों भागते? स्त्री चिढ़ी–भागे इसलिए कि वे लोग तुम-जैसे बुद्धुओं की तरह बैलों को सहलाते नहीं। खिलाते हैं, तो रगड़कर जोतते भी हैं। ये दोनों ठहरे कामचोर, भाग निकले। अब देखूँ, कहाँ से खली और चोकर मिलता है! सूखे भूसे के सिवा कुछ न दूँगी, खाएँ चाहें मरें। वही हुआ। मजूर को कड़ी ताकीद कर दी गई कि बैलों को खाली सूखा भूसा दिया जाए। बैलों ने नाँद में मुँह डाला, तो फीका-फीका। न कोई चिकनाहट, न कोई रस! क्या खाएँ? आशा-भरी आँखों से द्वार की ओर ताकने लगे। झूरी ने मजूर से कहा–थोड़ी-सी खली क्यों नहीं डाल देता बे? 'मालकिन मुझे मार ही डालेंगी।' 'चुराकर डाल आ।' 'न दादा, पीछे से तुम भी उन्हीं की-सी कहोगे।'	1.भारतवासियों को अमेरिका में क्यों घुसने नहीं दिया जाता है? 2.बैल को गधा का छोटा भाई क्यों माना जाता है?
4	5.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	प्रेमचंद/9 2 दूसरे दिन झूरी का साला फिर आया और बैलों को ले चला। अबकी उसने दोनों को गाड़ी में जोता। दो-चार बार मोती ने गाड़ी को सड़क की खाई में गिराना चाहा; पर हीरा ने संभाल लिया। वह ज़्यादा सहनशील था। संध्या-समय घर पहुँचकर उसने दोनों को मोटी रस्सियों से बाँधा और कल की शरारत का मज़ा चखाया। फिर वही सूखा भूसा डाल दिया। अपने दोनों बैलों को खली, चूनी सब कुछ दी। दोनों बैलों का ऐसा अपमान कभी न हुआ था। झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे। यहाँ मार पड़ी। आहत-सम्मान की व्यथा तो थी ही, उस पर मिला सूखा भूसा! नाँद की तरफ आँखें तक न उठाईं। दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी। वह मारते-मारते थक गया; पर दोनों ने पाँव न उठाया। एक बार जब उस निर्दयी ने हीरा की नाक पर खूब डंडे जमाए, तो मोती का गुस्सा काबू के बाहर हो गया। हल लेकर भागा। हल, रस्सी, जुआ, जोत, सब टूट-टाट कर बराबर हो गया। गले में बड़ी-बड़ी रस्सियाँ न होतीं, तो दोनों पकड़ाई में न आते। हीरा ने मूक-भाषा में कहा–भागना व्यर्थ है। मोती ने उत्तर दिया–तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी। 'अबकी बड़ी मार पड़ेगी।' 'पड़ने दो, बैल का जन्म लिया है, तो मार से कहाँ तक बचेंगे?' 'गया दो आदमियों के साथ दौड़ा आ रहा है। दोनों के हाथों में लाठियाँ हैं।' मोती बोला–कहो तो दिखा दूँ कुछ मज़ा मैं भी। लाठी लेकर आ रहा है। हीरा ने समझाया–नहीं भाई! खड़े हो जाओ। 'मुझे मारेगा, तो मैं भी एक-दो को गिरा दूँगा!' 'नहीं। हमारी जाति का यह धर्म नहीं है।' मोती दिल में ऐंठकर रह गया। गया आ पहुँचा और दोनों को पकड़ कर ले चला। कुशल हुई कि उसने इस वक्त मारपीट न की, नहीं तो मोती भी पलट पड़ता। उसके तेवर देखकर गया और उसके सहायक समझ गए कि इस वक्त टाल जाना ही मसलहत है। आज दोनों के सामने फिर वही सूखा भूसा लाया गया। दोनों चुपचाप खड़े रहे। घर के लोग भोजन करने लगे। उस वक्त छोटी-सी लड़की दो रोटियाँ लिए निकली, और दोनों के मुँह में देकर चली गई। उस एक रोटी से इनकी भूख तो क्या शांत होती; पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया। यह भी किसी सज्जन का वास है। लड़की भैरो की थी। उसकी माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ उसे मारती रहती थी, इसलिए इन बैलों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गई थी। 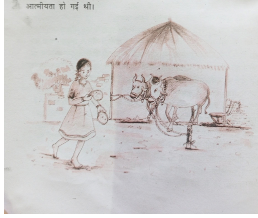 प्रेमचंद/11 दोनों दिन-भर जोते जाते, डंडे खाते, अड़ते। शाम को थान पर बाँध दिए जाते और रात को वही बालिका उन्हें दो रोटियाँ खिला जाती। प्रेम के इस प्रसाद की यह बरकत थी कि दो-दो गाल सूखा भूसा खाकर भी दोनों दुर्बल न होते थे, मगर दोनों की आँखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था। एक दिन मोती ने मूक-भाषा में कहा–अब तो नहीं सहा जाता, हीरा! 'क्या करना चाहते हो?' 'एकाध को सींगों पर उठाकर फेंक दूँगा।' 'लेकिन जानते हो, वह प्यारी लड़की, जो हमें रोटियाँ खिलाती है, उसी की लड़की है, जो इस घर का मालिक है। यह बेचारी अनाथ न हो जाएगी?' 'तो मालकिन को न फेंक दूँ। वही तो उस लड़की को मारती है।' 'लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।' 'तुम तो किसी तरह निकलने ही नहीं देते। बताओ, तुड़ाकर भाग चलें।' 'हाँ, यह मैं स्वीकार करता हूँ, लेकिन इतनी मोटी रस्सी टूटेगी कैसे?' 'इसका एक उपाय है। पहले रस्सी को थोड़ा-सा चबा लो। फिर एक झटके में जाती है।' रात को जब बालिका रोटियाँ खिलाकर चली गई, दोनों रस्सियाँ चबाने लगे, पर मोटी रस्सी मुँह में न आती थी। बेचारे बार-बार ज़ोर लगाकर रह जाते थे। सहसा घर का द्वार खुला और वही लड़की निकली। दोनों सिर झुकाकर उसका हाथ चाटने लगे। दोनों की पूँछें खड़ी हो गईं। उसने उनके माथे सहलाए और बोली–खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ, नहीं तो यहाँ लोग मार डालेंगे। आज घर में सलाह हो रही है कि इनकी नाकों में नाथ डाल दी जाए। उसने गराँव खोल दिया, पर दोनों चुपचाप खड़े रहे। मोती ने अपनी भाषा में पूछा–अब चलते क्यों नहीं? हीरा ने कहा–चलें तो लेकिन कल इस अनाथ पर आफत आएगी। सब इसी पर संदेह करेंगे। सहसा बालिका चिल्लाई–दोनों फूफावाले बैल भागे जा रहे हैं। ओ दादा! दादा! दोनों बैल भागे जा रहे हैं, जल्दी दौड़ो।	1. हीरा और मोती के प्रेम प्रकट करने के तरीके पर प्रकाश डालिए। 2. यदि ईश्वर ने बैलों को वाणी दी होती तो वे झूरी से क्या पूछते?

5	7.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	Art & craft class	1. हीरा और मोती के प्रेम प्रकट करने के तरीके पर प्रकाश डालिए। 2. यदि ईश्वर ने बैलों को वाणी दी होती तो वे झूरी से क्या पूछते?
6	8.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	12/ क्षितिज गया हड़बड़ाकर भीतर से निकला और बैलों को गया ने पीछा किया। और भी तेज़ हुए। गया ने शोर आदमियों को भी साथ लेने के लिए लौटा। दोनों मि गया। सीधे दौड़ते चले गए। यहाँ तक कि मार्ग का ज्ञा से आए थे, उसका यहाँ पता न था। नए-नए गाँव मि के किनारे खड़े होकर सोचने लगे, अब क्या करना हीरा ने कहा–मालूम होता है, राह भूल गए। 'तुम भी बेतहाशा भागे। वहीं उसे मार गिराना था 'उसे मार गिराते, तो दुनिया क्या कहती? वह अ अपना धर्म क्यों छोड़ें?' दोनों भूख से व्याकुल हो रहे थे। खेत में मटर ख आहट ले लेते थे, कोई आता तो नहीं है। जब पेट भर गया, दोनों ने आज़ादी का अनु उछलने-कूदने लगे। पहले दोनों ने डकार ली। फिर सीं ठेलने लगे। मोती ने हीरा को कई कदम पीछे हटा में गिर गया। तब उसे भी क्रोध आया। संभलकर उठा मोती ने देखा–खेल में झगड़ा हुआ चाहता है, तो कि 3 अरे! यह क्या? कोई साँड डौंकता चला आ रहा है। हाँ पहुँचा। दोनों मित्र बगलें झाँक रहे हैं। साँड पूरा हाथी है धोना है; लेकिन न भिड़ने पर भी जान बचती नहीं नज़ भी रहा है। कितनी भयंकर सूरत है! मोती ने मूक-भाषा में कहा–बुरे फँसे। जान बचेग हीरा ने चिंतित स्वर में कहा–अपने घमंड में भूला हु 'भाग क्यों न चलें?' 'भागना कायरता है।' 'तो फिर यहीं मरो। बंदा तो नौ-दो-ग्यारह होता 'और जो दौड़ाए?' 'तो फिर कोई उपाय सोचो जल्द!' 'उपाय यही है कि उस पर दोनों जने एक साथ हूँ, तुम पीछे से रगेदो, दोहरी मार पड़ेगी, तो भाग बगल से उसके पेट में सींग घुसेड़ देना। जान जोखि दोनों मित्र जान हथेलियों पर लेकर लपके। साँड का तजरबा न था। वह तो एक शत्रु से मल्लयुद्ध क पर झपटा, मोती ने पीछे से दौड़ाया। साँड उसकी त चाहता था कि एक-एक करके दोनों को गिरा ले; वह अवसर न देते थे। एक बार साँड झल्लाकर हीरा कि मोती ने बगल से आकर पेट में सींग भोंक दिया। तो हीरा ने दूसरे पहलू में सींग चुभा दिया। आखिर दोनों मित्रों ने दूर तक उसका पीछा किया। यहाँ तक तब दोनों ने उसे छोड़ दिया। दोनों मित्र विजय के नशे में झूमते चले जाते मोती ने अपनी सांकेतिक भाषा में कहा–मेरा मार ही डालूँ। हीरा ने तिरस्कार किया–गिरे हुए बैरी पर सींग 'यह सब ढोंग है। बैरी को ऐसा मारना चाहिए 'अब घर कैसे पहुँचेंगे, वह सोचो।' 'पहले कुछ खा लें, तो सोचें।' सामने मटर का खेत था ही। मोती उसमें घुस उसने एक न सुनी। अभी दो ही चार ग्रास खाए थे पड़े और दोनों मित्रों को घेर लिया। हीरा तो मेड़ पर	1.बैलों को ले जाते समय गया को किस प्रकार की कठिनाई का सामना करना पड़ा? 2. बैलों का नाँद में मुँह न डालने का कारण बताइए।

7	9.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	'भागना काय 'तो फिर यह 'और जो दौ 'तो फिर को 'उपाय यही हूँ, तुम पीछे से बगल से उसके दोनों मित्र जा का तजरबा न था पर झपटा, मोती चाहता था कि ए वह अवसर न देते कि मोती ने बगल तो हीरा ने दूसरे दोनों मित्रों ने दूर तब दोनों ने उसे दोनों मित्र वि मोती ने अपन मार ही डालूँ। हीरा ने तिरस् 'यह सब ढोंग 'अब घर कैस 'पहले कुछ सामने मटर उसने एक न सुनी पड़े और दोनों मित्र	1.छोटी लड़की का बालों से अपनापन होने का कारण बताइए। 2. पकड़े जाने पर भी गया बालों को पीट न सका, क्यों?

			14/क्षितिज खेत में था। उस देखा, संगी संक पकड़ लिया। प्रातःकाल द दोनों मित्रों को ज खाने को एक ति इससे तो गया फि गधे; पर किसी तो इतने कमज़ोर की ओर टकटकी दोनों ने दीवार क रात को भी दहक उठी। मोती मोती ने सिर रहे हैं। 'इतनी जल्द चाहिए।' 'आओ दीवार 'मुझसे तो अ 'बस इसी बू 'सारी अकड़ बाड़े की दीव में गड़ा दिए और	

8	11.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	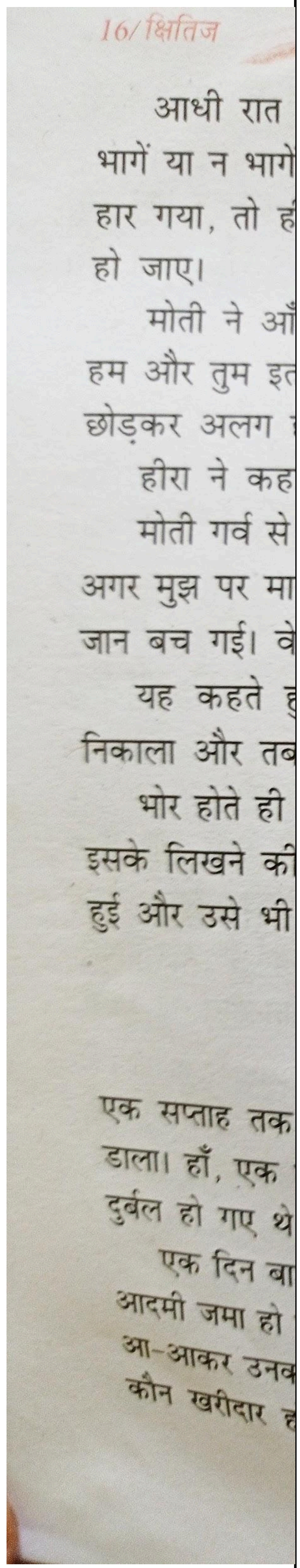 16/क्षितिज आधी रात भागें या न भागे हार गया, तो ह हो जाए। मोती ने आँ हम और तुम इत छोड़कर अलग हीरा ने कह मोती गर्व से अगर मुझ पर मा जान बच गई। वे यह कहते हु निकाला और तब भोर होते ही इसके लिखने की हुई और उसे भी एक सप्ताह तक डाला। हाँ, एक दुर्बल हो गए थे एक दिन बा आदमी जमा हो आ-आकर उनक कौन खरीदार ह	1. हीरा और मोती ने किस लिए जान की परवाह नहीं की? 2. कांजीहौस में बैलों की अवस्था का चित्रण कीजिए।

सहसा
आया और
उसका चेह
क्यों टटोल
नेत्रों से देख
हीरा ने
मोती ने
हैं। उन्हें हम
'भगवान
दिन उसके
था। क्या अब
'यह आ
'तो क्या
जाएँगे।'
नीलाम ह
बोटी-बोटी क
गिरते-पड़ते भ
जमा देता था।
राह में गा
प्रसन्न थे, चिव
कितना सुखी ज
उनके दो भाई
सहसा दोनों
उन्हें ले गया था
होने लगी। सारी
गया। इसी कुएँ

9	12.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	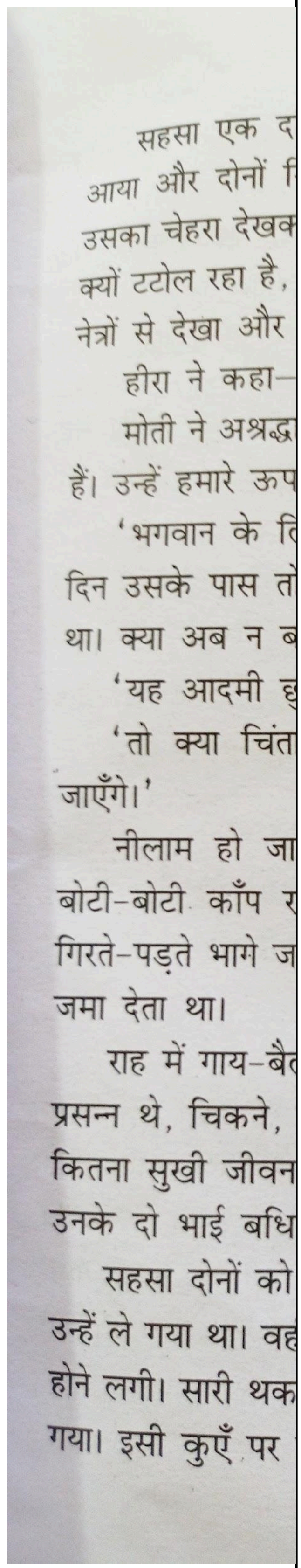 सहसा एक द आया और दोनों उसका चेहरा देखक क्यों टटोल रहा है, नेत्रों से देखा और हीरा ने कहा— मोती ने अश्रद्ध हैं। उन्हें हमारे ऊप 'भगवान के दिन उसके पास तो था। क्या अब न ब 'यह आदमी छु 'तो क्या चिंत जाएँगे।' नीलाम हो जा बोटी-बोटी काँप र गिरते-पड़ते भागे ज जमा देता था। राह में गाय-बैल प्रसन्न थे, चिकने, कितना सुखी जीवन उनके दो भाई बधि सहसा दोनों को उन्हें ले गया था। वह होने लगी। सारी थक गया। इसी कुएँ पर	1.दोनों बैलों के दढियल के साथ जाने की स्थिति का वर्णन कीजिए। 2.बैलों को किनका जीवन अधिक सुखमय लगा?

			 मोती ने व हीरा बोल 'मैं तो अ 'यह जाने 'इसे मैं ग 'नहीं-नहीं दोनों उन्म हमारा थान है पीछे-पीछे दौ झूरी द्वार से गले लगाने हाथ चाट रह दढ़ियल झूरी ने व 'तुम्हारे बै 'मैं तो स बेचूँगा तो बि 'जाकर श 'मेरे बैल दढ़ियल मोती ने सींग पीछे दौड़ा। ग रहा था, दढ़ि रहा था। और यह तमाशा दे	

			जब दढ़िय हीरा ने क 'अगर वह 'अब न अ 'आएगा तो 'जो गोली 'मर जाऊँगा 'हमारी जान 'इसीलिए वि ज़रा देर में न खाने लगे। झूरी ख सारे गाँव में उछा उसी समय म 1. कांजीहौस में कैद 2. छोटी बच्ची को 3. कहानी में बैलों के 4. प्रस्तुत कहानी में प्र अर्थ 'मूर्ख' का प्र 5. किन घटनाओं से 6. 'लेकिन औरत जात से स्त्री के प्रति प्रेम	

10	15.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	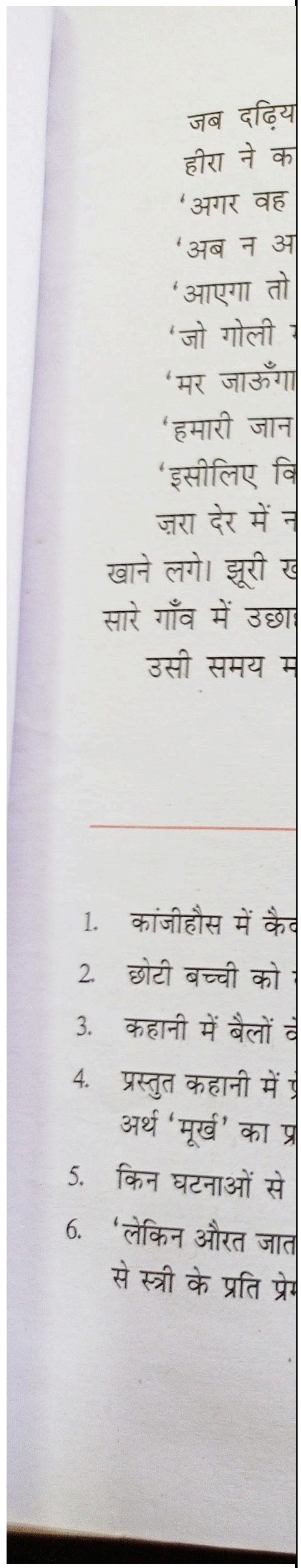 जब दढ़िय हीरा ने क 'अगर वह 'अब न अ 'आएगा तो 'जो गोली 'मर जाऊँगा 'हमारी जान 'इसीलिए वि ज़रा देर में न खाने लगे। झूरी ख सारे गाँव में उछा उसी समय म 1. कांजीहौस में कैद 2. छोटी बच्ची को 3. कहानी में बैलों वे 4. प्रस्तुत कहानी में प्र अर्थ 'मूर्ख' का प्र 5. किन घटनाओं से 6. 'लेकिन औरत जात से स्त्री के प्रति प्रेम	1. कांजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी क्यों ली जाती होगी? 2. छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

			प्रश्न अभ्यास- 1,2,3,4	

11	16.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	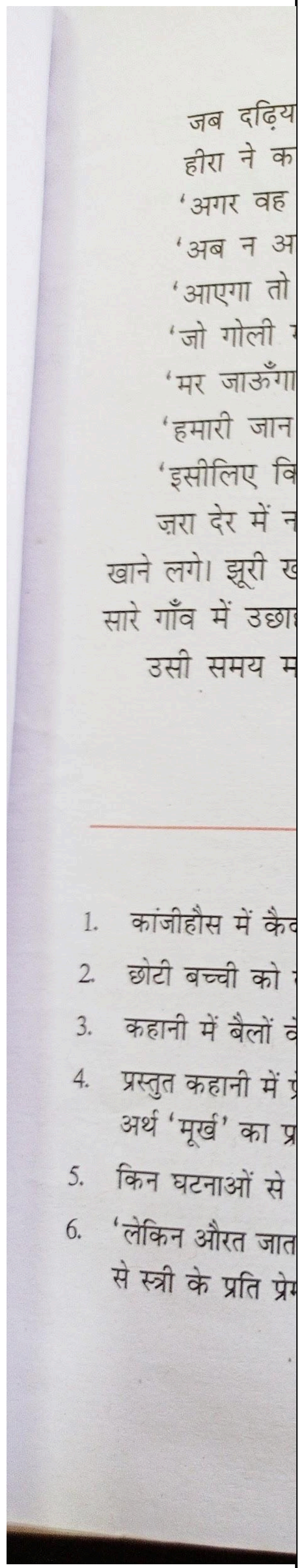 जब दढ़िय हीरा ने क 'अगर वह 'अब न अ 'आएगा तो 'जो गोली 'मर जाऊँगा 'हमारी जान 'इसीलिए वि ज़रा देर में न खाने लगे। झूरी ख सारे गाँव में उछा उसी समय म 1. कांजीहौस में कै 2. छोटी बच्ची को 3. कहानी में बैलों 4. प्रस्तुत कहानी में अर्थ 'मूर्ख' का प्र 5. किन घटनाओं से 6. 'लेकिन औरत जात से स्त्री के प्रति प्रे	1.कहानी में बैलों के माध्यम से कौन-कौन से नीति-विषयक मूल्य उभर कर आए हैं? 2.प्रस्तुत कहानी में प्रेमचंद ने गधे की किन स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ़ अर्थ 'मूर्छ प्रयोग न कर किस नए अर्थ की ओर संकेत किया है?

			प्रश्न अभ्यास- 5,6,7,8	

12	17.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	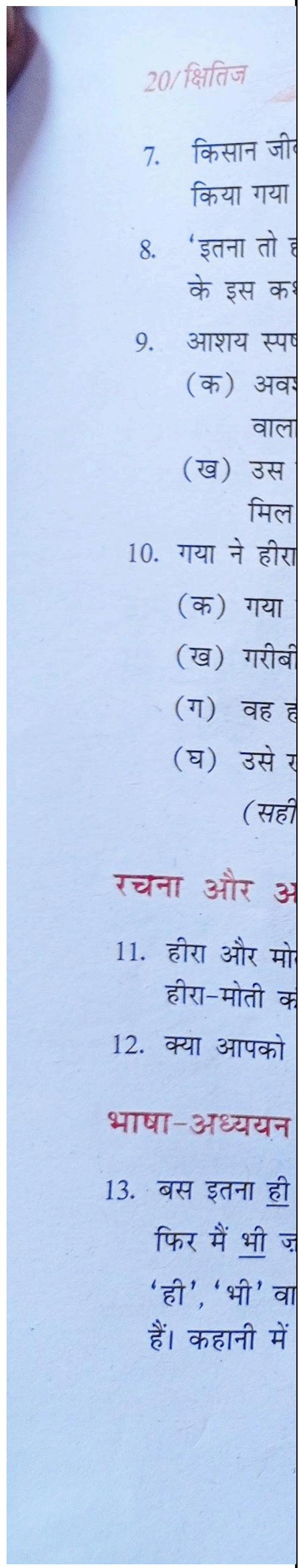 20/क्षितिज 7. किसान जी किया गया 8. 'इतना तो ह के इस क 9. आशय स्प (क) अव वाल (ख) उस मिल 10. गया ने हीर (क) गया (ख) गरीब (ग) वह ह (घ) उसे र (सही रचना और अ 11. हीरा और मो हीरा-मोती क 12. क्या आपको भाषा-अध्ययन 13. बस इतना ही फिर मैं भी ज़ 'ही', 'भी' वा हैं। कहानी में	1. किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी? 2. ' लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।'-हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

13	19.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	पाठ से संबंधित वीडियो दिखाया गया।	1. किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी संबंधों को कहानी में किस तरह व्यक्त किया गया है? 2. पाठ में से पांच मुहावरे छांटकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

14	21.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	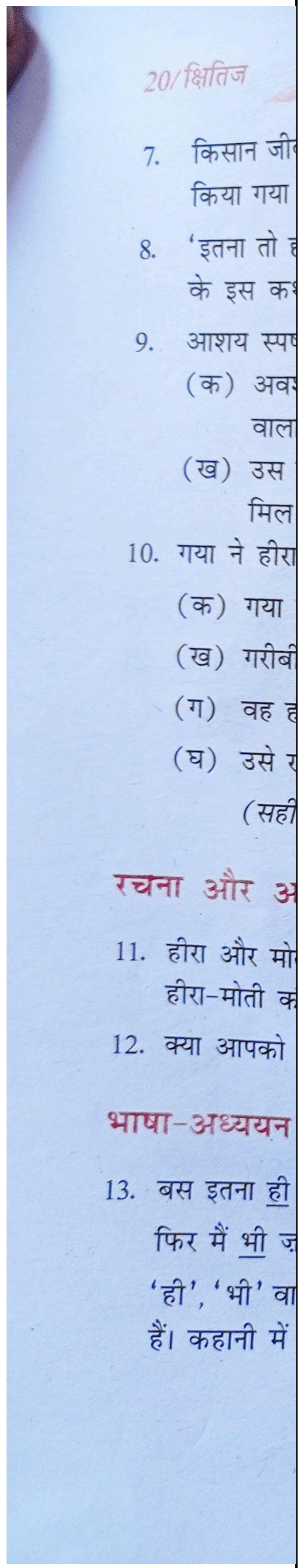 20/क्षितिज 7. किसान जी किया गया 8. 'इतना तो ह के इस क 9. आशय स्प (क) अव वाल (ख) उस मिल 10. गया ने हीरा (क) गया (ख) गरीब (ग) वह ह (घ) उसे (सही रचना और अ 11. हीरा और मो हीरा-मोती क 12. क्या आपको भाषा-अध्ययन 13. बस इतना ही फिर मैं भी 'ही', 'भी' वा हैं। कहानी में	1.इतना तो हो ही गया कि नौ दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगें'-मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताइए। 2.आशय स्पष्ट कीजिए (क) अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।

15	22.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	Dance, Music, Art & Craft	1.इतना तो हो ही गया कि नौ दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगें'-मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताइए। 2.आशय स्पष्ट कीजिए (क) अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।

16.	23.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	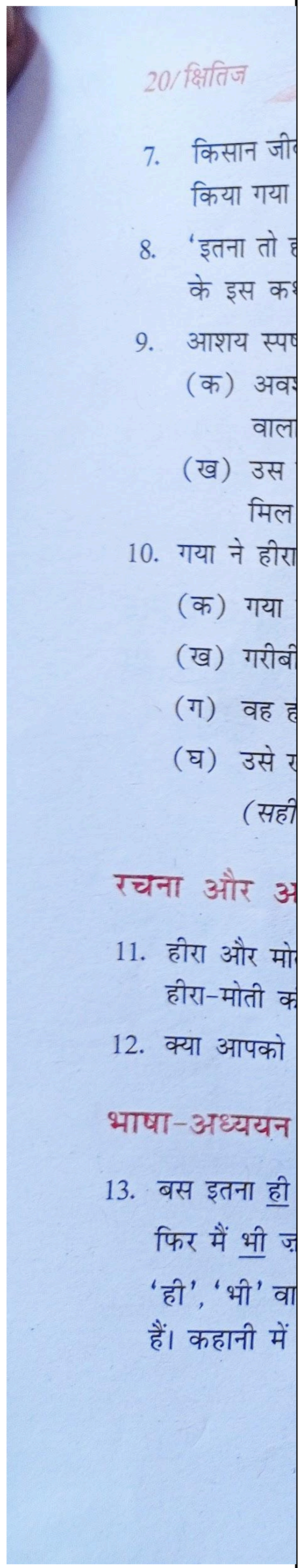 20/क्षितिज 7. किसान जी किया गया 8. 'इतना तो के इस क 9. आशय स्प (क) अव वाल (ख) उस मिल 10. गया ने हीरा (क) गया (ख) गरीब (ग) वह (घ) उसे (सही रचना और अ 11. हीरा और मो हीरा-मोती क 12. क्या आपको भाषा-अध्ययन 13. बस इतना ही फिर मैं भी 'ही', 'भी' वा हैं। कहानी में	1.हीरा और मोती ने शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाई लेकिन उसके लिए प्रताड़ना भी सही। हीरा-मोती की इस प्रतिक्रिया पर तर्क सहित अपने विचार प्रकट करें। 2.क्या आपको लगता है कि यह कहानी आजादी की लड़ाई की ओर भी संकेत करती है?

17	24.4.25	पाठ 1 दो बैलों की कथा	कहानी लेखन प्रतियोगिता	1.हीरा और मोती ने शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाई लेकिन उसके लिए प्रताड़ना भी सही। हीरा-मोती की इस प्रतिक्रिया पर तर्क सहित अपने विचार प्रकट करें। 2.क्या आपको लगता है कि यह कहानी आजादी की लड़ाई की ओर भी संकेत करती है?